शिवरात्रि - एक पर्व "जल सेवा" का

एक जमाना था जब हमारे पूर्वज "जल सेवा" के लिए गर्मियों में प्याऊ लगवाते थे; बावड़ी, कुआँ, और तालाब बनवाते थे; परन्तु आज के शहरी वातावरण में न तो इस काम के अवसर हैं और न ही हमारे मन में "जल सेवा" का भाव जगता है। गांव का शिवालय भी "जल सेवा" की प्रेरणा देता था परन्तु आज कितने लोग शिव को जल चढ़ाने मंदिर जाते हैं ? ईश्वर को न मानने वाले भी यदि थोड़ा ध्यान दें तो जल का एक या आधा लोटा शिवलिंग को चढ़ाना कुछ मायने रखता है।

रामचरित मानस (रामायण) के उत्तर काण्ड में एक शिव स्तुति है जिसके प्रारंभिक शब्द हैं -

"नमामि शमीशान निर्वाण रूपम् , विभुम् व्यापकम् ब्रह्म वेदस्वरूपम्"

संस्कृत की इसी वंदना में एक लाइन है - **"प्रसीद प्रभो सर्वभूतादिवासम्"**

इस का मतलब है - मैं समस्त भूतप्राणियों व जीवधारियों में बसने वाले शिव को प्रणाम करता हूँ।

इसी भाव को गोस्वामी तुलसीदास ने अन्यत्र व्यक्त किया है - **सियाराम मय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जग पाणी।** अर्थात सब प्राणियों को मैं सियाराम स्वरुप जानकर व मानकर, दोनों हाथ जोड़कर नमन करता हूँ। सरल शब्दों में कहें तो हर प्राणी को ईश्वर रूप में जानना और मानना ही सनातन संस्कृति व धर्म का आधार है। इसी भावना को मन में रखते हुए महाराष्ट्र के संत एकनाथ ने गंगोत्री से रामेश्वरम में चढ़ाने के लिए लायी गई काँवड़ प्यास से तड़फते गधे को अर्पित कर दी। कहते हैं, भगवान शंकर ने दर्शन देकर कहा-" "तुम्हारा गंगा जल मुझे प्राप्त हो गया"

ईश्वर उपासना को हम केवल पूजा पद्धति तक सीमित न करें, बल्कि हर जीव में शिव को पहचानने की कोशिश करें। इस संदर्भ में शिवरात्रि पर जल चढ़ाते समय हम मानव कल्याण के लिए "जल सेवा" का संकल्प करें। आज के परिप्रेक्ष्य में जब धरती के गर्भ में जल-स्तर लगातार नीचे जा रहा है तो 'वाटर हार्वेस्टिंग' अर्थात वर्षा के शुद्ध जल को भूमि के अंदर पहुँचाना भी जल सेवा है।

दैनिक समाचार अमर उजाला में जनवरी में एक दिन घटते जल स्तर पर चिंता जताई गई तो अगले दिन गाज़ियाबाद के वसुंधरा इलाके में पानी के हैंड पम्प पर लगी लम्बी कतार का चित्र दर्शाया। अब जनवरी के आखिरी सप्ताह में अगर यह हाल है तो मई-जून की गर्मी में पानी का क्या हाल होगा?

स्मार्ट सिटी में चौबीस घंटे पानी उपलब्ध कराने की बात हो रही है लेकिन धरती की कोख में अगर पानी घट जायेगा तो यह सप्लाई क्या अंतरिक्ष में मंगल ग्रह से आएगी? तो जागिये ! अपने लिए भी और अपनी संतान के लिए भी। वाटर हार्वेस्टिंग किसी कानून से लागू नहीं हो पायेगा। हमें और आपको प्रयास करना पड़ेगा। वर्षा के शुद्ध जल को संचित करें और अपने इस्तेमाल में भी बचत की आदत डालें। खुले जल से न कार को नहलाएँ और न ही खुद नहाने की सोचें। कहीं पीने के लिए पानी का गिलास लेते हैं तो थोड़ा सा पीकर झूठा न छोड़ें। पूरा पी लें तो नुक्सान नहीं करेगा क्योंकि इसमें भी "जल सेवा" है।

- वीरेन्द्र ग्रोवर

SD - 72 , शास्त्री नगर , ग़ाजियाबाद